REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 10 | JULY - 2025

त्यागपत्र की मृणाल और गोदान की धनिया: जैनेंद्र और प्रेमचंद के स्त्री पात्रों के संघर्ष और वैचारिक भिन्नता का तुलनात्मक अध्ययन

रीता देवी
सहायक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग राजकीय महाविद्यालय
सरकाघाट जिला मंडी, (हिमाचल प्रदेश)

1. प्रस्तावना

हिंदी उपन्यास साहित्य में मुंशी प्रेमचंद और जैनेन्द्र कुमार का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। दोनों ही अपने-अपने युग के प्रमुख साहित्यकार रहे हैं, जिन्होंने भारतीय समाज और मानव मन की गहराइयों को अपनी रचनाओं के माध्यम से उद्घाटित किया। प्रेमचंद को 'उपन्यास सम्राट' के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने सामाजिक यथार्थवाद को अपनी कृतियों का आधार बनाया । उनके उपन्यास भारतीय ग्रामीण जीवन, किसानों की दुर्दशा, सामाजिक कुरीतियों जैसे जमींदारी प्रथा, छुआछूत, दहेज, अनमेल विवाह और शोषण का जीवंत चित्रण प्रस्तुत करते हैं । प्रेमचंद का लेखन समाज की व्यापक समस्याओं और सामूहिक चेतना पर केंद्रित रहा है। वे सामाजिक परिवर्तन के लिए बाह्य संघर्ष को महत्वपूर्ण मानते थे, और उनका साहित्य समाज की विसंगतियों को उजागर कर उसमें सुधार की प्रेरणा देता था।

इसके विपरीत, जैनेन्द्र कुमार प्रेमचंद के समकालीन होते हुए भी अपनी एक अलग साहित्यिक पहचान स्थापित करते हैं। उन्हें हिंदी साहित्य में मनोवैज्ञानिक और मनोविश्लेषणवादी परंपरा का प्रवर्तक माना जाता है । जैनेन्द्र का ध्यान बाहरी घटनाओं के बजाय मानव मन के सूक्ष्म विश्लेषण, उसकी मनोवैज्ञानिक जटिलताओं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की खोज पर केंद्रित रहा है । उनकी विश्वदृष्टि व्यक्ति के अंतर्मन और उसकी आंतरिक मुक्ति को प्राथमिकता देती है, जो उनके स्त्री पात्रों के संघर्षों और वैचारिक भिन्नताओं को समझने की एक महत्वपूर्ण कुंजी है।

प्रस्तुत शोध पत्र में जैनेन्द्र के उपन्यास 'त्यागपत्र' की नायिका मृणाल और प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' की नायिका धनिया के स्त्री पात्रों का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाएगा। 'त्यागपत्र' (1937) एक मार्मिक और संवेदनशील उपन्यास है जो आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है । यह उपन्यास मृणाल के यातनापूर्ण जीवन और उसके भतीजे प्रमोद के आत्मग्लानि से भरे त्यागपत्र के इर्द-गिर्द घूमता है । यह तत्कालीन समाज की रूढ़िवादी परंपराओं, अनमेल विवाह की पीड़ा और नारी की परवशता को उजागर करता है । दूसरी ओर, 'गोदान' (1936) प्रेमचंद का अंतिम और सबसे उत्कृष्ट उपन्यास है । यह स्वतंत्रता-

पूर्व भारत के ग्रामीण जीवन, विशेषकर किसान होरी और उसकी पत्नी धनिया के माध्यम से कृषक समाज की दुर्दशा, शोषण, सामाजिक अन्याय और आर्थिक विषमता का महाकाव्यात्मक चित्रण करता है [1]।

मृणाल, 'त्यागपत्र' की नायिका, बचपन से ही स्वच्छंद विचरण करने की आकांक्षा रखती है, लेकिन सामाजिक रीति-रिवाजों और अनमेल विवाह के कारण उसका जीवन त्रासदीपूर्ण हो जाता है । वह सत्यनिष्ठा और प्रेम के प्रति अपनी आस्था नहीं छोड़ती, भले ही उसे आजीवन कष्ट सहने पड़ें । वहीं, धनिया, 'गोदान' की नायिका, होरी की पत्नी, एक मजबूत, कर्मठ, स्वाभिमानी और निडर ग्रामीण महिला है । वह अपने परिवार के लिए गरीबी, शोषण और सामाजिक अन्याय के खिलाफ लगातार संघर्ष करती है और कभी हार नहीं मानती ।

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य मृणाल के आंतरिक, मनोवैज्ञानिक संघर्षों और धनिया के बाह्य, सामाजिक-आर्थिक संघर्षों का गहन विश्लेषण करना है। इसके साथ ही, यह दोनों पात्रों की नारी मुक्ति, सामाजिक भूमिका और व्यक्तिगत स्वाधीनता संबंधी वैचारिक भिन्नताओं और समानताओं को उजागर करेगा, जो उनके रचनाकारों के भिन्न-भिन्न साहित्यिक दर्शनों का स्पष्ट प्रतिबिंब हैं।

2. जैनेन्द्र की मृणाल: वैयक्तिक स्वतंत्रता और आत्मपीड़न का संघर्ष

जैनेन्द्र के उपन्यास 'त्यागपत्र' की नायिका मृणाल का जीवन वैयक्तिक स्वतंत्रता की आकांक्षा और सामाजिक बंधनों के बीच एक करुण संघर्ष की गाथा है। उसका चरित्र जैनेन्द्र के मनोवैज्ञानिक दर्शन का उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ बाहरी घटनाओं से अधिक पात्र के आंतरिक द्वंद्व पर बल दिया गया है।

मृणाल का चरित्र चित्रण: स्वच्छंदता की आकांक्षा और सामाजिक बंधन

मृणाल का प्रारंभिक जीवन उल्लास और चंचलता से परिपूर्ण था। वह अपने भतीजे प्रमोद के साथ खट्टे-मीठे अनुभवों को साझा करती थी और उसमें एक चिड़िया की तरह स्वच्छंद विचरण करने की हार्दिक आकांक्षा थी । यह स्वतंत्रता की चाह उसके चरित्र का मूल आधार है, जो उसे तत्कालीन समाज की परंपरागत 'आर्य नारी' की पिंजरे जैसी कैद से बाहर निकलने के लिए संघर्ष करने को प्रेरित करती है । हालांकि, भारतीय समाज की रूढ़ियों और परिवार द्वारा थोपे गए बंधनों ने उसे इस स्वच्छंदता से वंचित रखने का प्रयास किया। मृणाल की 'चिड़िया' बनने की इच्छा उसकी आंतरिक स्वतंत्रता की गहरी लालसा को दर्शाती है। यह लालसा तत्कालीन भारतीय समाज की कठोर रीति-नीतियों के कारण पूरी नहीं हो पाती, जिससे उसका जीवन आत्मपीड़न की करुण कथा बन जाता है । यह विरोधाभास जैनेन्द्र के मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद का केंद्रीय बिंदु है: व्यक्ति की आंतरिक इच्छाएँ और सामाजिक वास्तविकता के बीच का तीव्र टकराव। मृणाल का संघर्ष बाहरी विद्रोह के बजाय आंतरिक टूटन और स्वयं को उत्सर्ग करने में प्रकट होता है ।

अनमेल विवाह और सामाजिक प्रताड़ना: यातनापूर्ण जीवन की शुरुआत

मृणाल का जीवन उसके प्रेम संबंध की असफलता और उसके बाद हुए अनमेल विवाह के कारण एक त्रासदी में बदल गया। उसे अपने मित्र शीला के बड़े भाई से प्रेम था, लेकिन यह प्रेम सफल नहीं हो सका । सामाजिक मानदंडों और पारिवारिक

दबाव के चलते उसे एक अधेड़ विधुर से विवाह के लिए बाध्य किया गया, जो उसके लिए जीवन भर का अभिशाप बन गया । इस विवाह में उसे मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ा और अंततः उसे घर से निकाल दिया गया । मृणाल का अनमेल विवाह केवल एक घटना नहीं, बल्कि तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति का प्रतीक है, जहाँ उसकी इच्छाओं और भावनाओं को कोई महत्व नहीं दिया जाता था । इस विवाह ने उसके जीवन को यातनापूर्ण बना दिया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक संरचना व्यक्तिगत भाग्य को कैसे निर्धारित करती है। उसका निष्कासन और उसके बाद का जीवन यह दर्शाता है कि एक बार सामाजिक मर्यादा तोड़ने पर नारी के लिए समाज में कोई स्थान नहीं बचता था, भले ही वह स्वयं पीड़ित हो। यह जैनेन्द्र द्वारा समाज की 'खोखली' मान्यताओं पर गहरा प्रहार है ।

सत्यनिष्ठा और प्रेम की कीमत: समाज द्वारा परित्यक्ता की स्थिति

मृणाल ने अपने जीवन में सदैव सत्यनिष्ठा का पालन किया और अपने प्रेम को स्वीकार करने में कभी हिचकिचाई नहीं । उसने अपने पति के प्रति भी समर्पण में कोई छल नहीं किया और अपने पूर्व संबंध के बारे में उसे बताया । इस सत्यनिष्ठा के कारण उसे आजीवन सजा मिली, क्योंकि उसने समाज की नजरों में अपनी अच्छी छवि बनाने के लिए सत्य को छिपाने का कोई प्रयास नहीं किया । आर्थिक रूप से पराधीन होने के कारण, उसे कोयले वाले के साथ रहने को विवश होना पड़ा और अंततः वह एक बदनाम बस्ती में जाकर मर गई । मृणाल की सत्यनिष्ठा और प्रेम के प्रति उसकी अडिग आस्था उसे तत्कालीन समाज की पाखंडी नैतिकताओं से टकराती है। समाज नारी से पतिव्रता धर्म का निर्वाह करने की अपेक्षा करता है, भले ही वह अनमेल विवाह और उत्पीड़न का शिकार हो । मृणाल का सत्य बोलना उसे समाज से बहिष्कृत कर देता है, जबकि पुरुष समाज अपनी अनैतिकताओं को छुपाकर प्रतिष्ठित बना रहता है। यह जैनेन्द्र का समाज के दोहरे मापदंडों पर सूक्ष्म और गहरा कटाक्ष है, और यह दर्शाता है कि व्यक्तिगत सत्य की कीमत कितनी भारी हो सकती है।

आंतरिक द्वंद्व और आत्म-त्याग: मुक्ति की तलाश में आत्मपीड़न

मृणाल की कहानी आत्मपीड़न और दया भाव की एक करुण कथा है । वह अपने जीवन के हर मोड़ पर गहन आंतरिक संघर्षों से जूझती है । वह समाज की झूठी रीति-नीति को तोड़ती है, जिसमें नारी को पतिव्रता का धर्म निभाने को बाध्य किया जाता है । जैनेन्द्र की नायिकाएँ बाहरी तौर पर विद्रोह नहीं करतीं, बल्कि आत्मोत्सर्ग के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों के प्रति अपना आक्रोश प्रकट करती हैं । मृणाल स्वयं टूटना पसंद करती है, पर टूटने के बाद भी समाज की मंगलकामना करती है । मृणाल का आत्मपीड़न और आत्म-त्याग बाहरी विद्रोह की अनुपस्थिति में उसकी मुक्ति का एक अनोखा दर्शन प्रस्तुत करता है। यह सुझाव देता है कि जैनेन्द्र के लिए नारी की सच्ची मुक्ति सामाजिक बंधनों को तोड़कर बाहरी स्वतंत्रता प्राप्त करने में नहीं, बल्कि आंतरिक रूप से अपने सत्य और मूल्यों के प्रति अडिग रहने और उसके लिए किसी भी कीमत पर स्वयं को उत्सर्ग कर देने में है। यह एक आध्यात्मिक या दार्शनिक मुक्ति है, जो भौतिकवादी सुख या सामाजिक स्वीकृति से परे है। प्रमोद का त्यागपत्र मृणाल के साथ हुए अत्याचारों के प्रायश्चित के तौर पर है, जो इस आंतरिक पीड़ा और उसके प्रभाव को दर्शाता है ।

जैनेन्द्र के मनोवैज्ञानिक दर्शन का मृणाल पर प्रभाव

जैनेन्द्र हिंदी साहित्य में मनोविश्लेषणवादी परंपरा के प्रवर्तक हैं, जिनका मुख्य ध्यान चरित्रों के मानसिक संघर्षों पर केंद्रित रहता है । मृणाल का चरित्र इसी दर्शन का उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ उसके दुख, ग्लानि, असंतोष और आंतरिक द्वंद्व का गहन विश्लेषण किया गया है । जैनेन्द्र ने अपने साहित्य में नारी को पुरुषों के मुकाबले अधिक अर्थपूर्ण बनाया और भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री विरोधी प्रवृत्तियों का गहन विश्लेषण किया । जैनेन्द्र का मनोवैज्ञानिक दर्शन केवल व्यक्ति के अंतर्मन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक रूढ़ियों और व्यवस्था की आलोचना का एक सूक्ष्म माध्यम भी है। मृणाल के आंतरिक संघर्ष सीधे तौर पर तत्कालीन समाज की स्त्री-विरोधी प्रवृत्तियों का परिणाम हैं। इस प्रकार, जैनेन्द्र व्यक्तिगत पीड़ा के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों को उजागर करते हैं, यह दर्शाते हुए कि कैसे बाहरी सामाजिक दबाव व्यक्ति के आंतरिक जीवन को तोड़ देते हैं। यह समाज पर एक मौन, लेकिन गहरा प्रहार है।

3. प्रेमचंद की धनिया: यथार्थवादी प्रतिरोध और पारिवारिक निष्ठा का संघर्ष

प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' की नायिका धनिया भारतीय ग्रामीण नारी के यथार्थवादी प्रतिरोध और पारिवारिक निष्ठा का प्रतीक है। उसका चरित्र प्रेमचंद के आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ सामाजिक-आर्थिक संघर्षों के बीच भी मानवीय मूल्यों और स्वाभिमान को बनाए रखा जाता है।

धनिया का चरित्र चित्रण: ग्रामीण नारी का स्वाभिमान और कर्मठता

धनिया होरी की पत्नी है और 'गोदान' की केंद्रीय स्त्री पात्रों में से एक है। वह एक मजबूत, सहायक और मेहनती महिला है जो खेतों में और घर पर अथक परिश्रम करती है । वह ग्रामीण भारत की उस महिला का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने स्वाभिमान को बनाए रखते हुए जीवन भर गरीबी, दरिद्रता और शोषण के खिलाफ संघर्ष करती है । धनिया ऊपर से कठोर प्रतीत होती है, लेकिन उसका हृदय अत्यंत कोमल और दयालु है । वह दीन-दुखियों के प्रति सहानुभूति रखती है और उन्हें अपने घर में आश्रय देती है, जैसा कि झुनिया और सिलिया के प्रसंग में देखा जा सकता है । धनिया का चरित्र केवल एक किसान पत्नी का नहीं, बल्कि ग्रामीण भारतीय समाज में नारी की बहुआयामी भूमिका का प्रतीक है। वह न केवल परिवार का भरण-पोषण करने वाली कर्मठ श्रमिक है, बल्कि सामाजिक अन्याय के खिलाफ मुखर आवाज और मानवीय मूल्यों की संरक्षक भी है। उसकी "ऊपर से कठोर, हृदय से कोमल" प्रकृति उस यथार्थ को दर्शाती है जहाँ ग्रामीण महिला को बाहरी दुनिया की कठोरता का सामना करने के लिए मजबूत दिखना पड़ता है, लेकिन भीतर से वह मातृत्व और करुणा से भरी होती है। यह प्रेमचंद के यथार्थवादी चित्रण की गहराई को दर्शाता है।

आर्थिक अभाव और शोषण के विरुद्ध संघर्ष: महाजनी सभ्यता का प्रतिरोध

धनिया का जीवन गरीबी और अभावों से भरा है। उसे अपने परिवार का पेट भरने और पति के कर्ज चुकाने के लिए दिन-रात कड़ी मेहनत करनी पड़ती है । वह जमींदारों और साहूकारों द्वारा किसानों के शोषण का मुखर विरोध करती है । वह रिश्वतखोरी और अन्याय के खिलाफ भी आवाज उठाती है, जैसा कि होरी को दरोगा को पैसे देने से रोकने के उसके प्रयास से

स्पष्ट होता है । प्रेमचंद के उपन्यासों में आर्थिक शोषण एक केंद्रीय विषय है । धनिया का संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि पूरे कृषक वर्ग के आर्थिक शोषण के खिलाफ एक प्रत्यक्ष प्रतिरोध है। उसका दरोगा से पैसे छीनने का प्रयास और पंचों को फटकारना यह दर्शाता है कि वह निष्क्रिय पीड़ित नहीं है, बल्कि अन्याय के खिलाफ सक्रिय रूप से खड़ी होती है। यह प्रेमचंद के 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद' का उदाहरण है, जहाँ यथार्थ की कठोरता के बावजूद पात्र अन्याय का विरोध करने का साहस दिखाते हैं। यह धनिया को मृणाल से अलग करता है, जो मुख्य रूप से आंतरिक पीड़ा सहती है।

सामाजिक रूढ़ियों और पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती

धनिया सामाजिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों को नहीं मानती। वह झुनिया, जो पाँच महीने की गर्भवती विधवा है, और सिलिया, एक दलित महिला, को अपने घर में आश्रय देती है, भले ही इसके लिए उसे पूरे गाँव और बिरादरी का कड़ा विरोध झेलना पड़े । वह पंचों के अन्यायपूर्ण फैसलों का खुलकर विरोध करती है और उन्हें चुनौती देती है । वह पितृसत्तात्मक समाज में पुरुषों के दोहरे मापदंडों को पहचानती है और उनका विरोध करती है । धनिया का झुनिया और सिलिया को आश्रय देना केवल दयालुता नहीं, बल्कि सामाजिक रूढ़ियों और जातिगत भेदभाव के खिलाफ एक साहसिक चुनौती है। यह दर्शाता है कि उसकी वैचारिक पृष्ठभूमि मानवता और सत्य पर आधारित है, जो थोथी मर्यादाओं और धार्मिक आडंबरों से ऊपर है । इस प्रकार, वह अपने कार्यों से समाज को एक नया आदर्श प्रस्तुत करती है, जहाँ मानवीय संबंध सामाजिक नियमों से अधिक महत्वपूर्ण हैं। यह प्रेमचंद के प्रगतिशील विचारों का प्रतिबिंब है, जो नारी को सामाजिक परिवर्तन के वाहक के रूप में देखते हैं।

मातृत्व, पारिवारिक दायित्व और होरी की सहधर्मिणी के रूप में भूमिका

धनिया एक समर्पित माता है, जो अपने बच्चों के लिए अनेक संघर्ष करती है और उनके भविष्य की चिंता करती है । वह होरी की सच्ची सहधर्मिणी और सहकर्मी है, जो जीवन संघर्ष में उसका साथ कभी नहीं छोड़ती, भले ही उसे होरी की दब्बू प्रवृत्ति के कारण अनेक कष्ट सहने पड़ें । वह एक पतिव्रता नारी है, जिसने कभी किसी दूसरे पुरुष की ओर नहीं देखा । जब होरी बीमार पड़ता है, तो वह अपने सारे मान-अपमान को भूलकर उसकी सेवा करती है, यह कहते हुए कि पति जब मर रहा हो तो उससे कैसा बैर । धनिया का चरित्र पारिवारिक निष्ठा और व्यक्तिगत प्रतिरोध के बीच एक जटिल संतुलन दर्शाता है। वह अपने परिवार के प्रति अत्यंत समर्पित है, जो उसे भारतीय नारी के पारंपरिक आदर्श के करीब लाता है । हालाँकि, उसकी यह निष्ठा उसे अन्याय के खिलाफ बोलने या सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देने से नहीं रोकती। वह परिवार के भीतर रहते हुए भी अपने स्वाभिमान और न्याय के सिद्धांतों पर अडिग रहती है। यह प्रेमचंद के नारी चित्रण की विशेषता है, जहाँ नारी को केवल पारंपरिक भूमिकाओं में नहीं देखा जाता, बल्कि उन भूमिकाओं के भीतर भी उसकी शक्ति और प्रतिरोध को दर्शाया जाता है।

प्रेमचंद के आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद का धनिया के चरित्र में प्रतिबिंब

प्रेमचंद यथार्थवाद के संदर्भ में आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद का अर्थ ग्रहण करते प्रतीत होते हैं । धनिया का चरित्र इस दर्शन का उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ यथार्थ की कठोरता के बावजूद मानवीय मूल्यों और आदर्शों को बनाए रखने का प्रयास किया जाता है । वह समाज में स्त्रियों की दयनीय दशा को इंगित करती है, लेकिन साथ ही उनमें चेतना भरने का प्रयास भी करती है ।

प्रेमचंद का 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद' धनिया के चरित्र में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। वह ग्रामीण जीवन की कठोर वास्तविकताओं (गरीबी, शोषण) से जूझती है, लेकिन अपनी मानवीयता, न्यायप्रियता और स्वाभिमान को कभी नहीं छोड़ती । यह दर्शाता है कि प्रेमचंद केवल समस्याओं का चित्रण नहीं करते, बल्कि उन समस्याओं के बीच भी मानवीय आदर्शों और नैतिक दृढ़ता को बनाए रखने वाले पात्रों का निर्माण करते हैं। धनिया का संघर्ष केवल अस्तित्व का नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों को बनाए रखने का भी है, जो उसे एक 'आदर्श' यथार्थवादी पात्र बनाता है।

4. मृणाल और धनिया के संघर्षों की तुलना: वैचारिक भिन्नता और समानताएँ

मृणाल और धनिया, दोनों ही स्वतंत्रता-पूर्व भारतीय समाज में नारी की पीड़ा और संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं, किंतु उनके संघर्षों की प्रकृति, विरोध का स्वरूप, प्रेम के प्रति दृष्टिकोण और नारी मुक्ति की अवधारणा में स्पष्ट वैचारिक भिन्नताएँ दिखाई देती हैं, जो उनके रचनाकारों के भिन्न-भिन्न साहित्यिक दर्शनों का प्रतिबिंब हैं।

संघर्ष की प्रकृति में भिन्नता

मृणाल का संघर्ष मुख्य रूप से आंतरिक, मनोवैज्ञानिक और वैयक्तिक स्वतंत्रता का है । वह समाज की रूढ़ियों और अनमेल विवाह के कारण उत्पन्न आत्मपीड़न, ग्लानि और असंतोष से जूझती है। उसका संघर्ष स्वयं के सत्य और इच्छाओं को समाज की अपेक्षाओं के विरुद्ध बनाए रखने का है, भले ही इसका परिणाम सामाजिक अलगाव और त्रासदी हो। जैनेन्द्र का ध्यान 'मनोविश्लेषण' पर है , इसलिए मृणाल का संघर्ष मुख्य रूप से उसके अंतर्मन में घटित होता है, जहाँ वह सामाजिक दबावों और अपनी व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा के बीच फंसी है।

इसके विपरीत, धनिया का संघर्ष बाह्य, सामाजिक-आर्थिक और पारिवारिक अस्तित्व का है । वह गरीबी, महाजनी शोषण, जमींदारी प्रथा और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के अन्याय के खिलाफ लड़ती है। उसका संघर्ष अपने परिवार की रक्षा करने और अपने स्वाभिमान को बनाए रखने का है। प्रेमचंद 'सामाजिक यथार्थवाद' के पुरोधा हैं , और धनिया का संघर्ष सीधे तौर पर समाज की आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं से है। यह भिन्नता केवल पात्रों के चुनाव में नहीं, बल्कि लेखकों की इस गहरी समझ में निहित है कि मानव पीड़ा कहाँ से उत्पन्न होती है – व्यक्तिगत मानस से या सामाजिक व्यवस्था से।

सामाजिक विरोध का स्वरूप

मृणाल का विरोध मौन आत्म-पीड़न और समाज से अलगाव के रूप में प्रकट होता है। वह समाज की झूठी रीति-नीति को तोड़ती है, लेकिन यह तोड़ना सक्रिय विद्रोह नहीं, बल्कि सत्यनिष्ठा के कारण समाज द्वारा परित्यक्त होना है । वह घर वापस नहीं आती क्योंकि यह समाज की दृष्टि में सही नहीं होगा । मृणाल का 'विद्रोह' समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाओं और अपेक्षाओं को स्वीकार न करने की उसकी आंतरिक दृढ़ता में निहित है, भले ही इसका परिणाम उसका स्वयं का अंतर्द्वंद्व और सामाजिक बहिष्कार हो। वह समाज से कट जाती है, लेकिन अपने सिद्धांतों से नहीं हटती।

धनिया का विरोध मुखर और प्रत्यक्ष है। वह अन्याय के खिलाफ सीधी आवाज उठाती है, पंचों, महाजनों और दरोगा को फटकारती है । वह सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देती है, जैसे झुनिया को आश्रय देना, और अपने अधिकारों के लिए लड़ती

है । धनिया का 'विद्रोह' सामाजिक अन्याय के खिलाफ एक सक्रिय और मुखर प्रतिक्रिया है, जो सीधे तौर पर सामाजिक व्यवस्था को चुनौती देती है। यह दर्शाता है कि नारी मुक्ति के लिए संघर्ष के दो अलग-अलग रास्ते हो सकते हैं: एक आंतरिक आत्म-संरक्षण का, दूसरा बाह्य सामाजिक परिवर्तन का।

प्रेम और संबंधों के प्रति दृष्टिकोण

मृणाल का प्रेम में सत्यनिष्ठा और समर्पण है, भले ही वह सामाजिक मर्यादा के विरुद्ध हो । वह प्रेम को सदैव मानती है और उसे छिपाने का प्रयास नहीं करती । उसका संबंध कोयले वाले से भी आत्मीयता और सहानुभूति पर आधारित है, न कि केवल मजबूरी पर । मृणाल का प्रेम एक आदर्शवादी, निस्वार्थ और सत्य-आधारित अवधारणा है, जो सामाजिक परिणामों की परवाह नहीं करती। यह जैनेन्द्र के मनोवैज्ञानिक चिंतन का हिस्सा है, जहाँ भावना की शुद्धता को सामाजिक स्वीकृति से ऊपर रखा जाता है।

धनिया का प्रेम व्यवहारिकता और पारिवारिक निष्ठा पर आधारित है। वह अपने पति होरी के प्रति समर्पित है, उसकी कमियों के बावजूद उसका साथ देती है । उसका मातृत्व प्रेम उसे झुनिया और सिलिया जैसे पात्रों को आश्रय देने के लिए प्रेरित करता है, जो सामाजिक रूप से बहिष्कृत हैं । धनिया का प्रेम अधिक व्यवहारिक और पारिवारिक है, जो कर्तव्य, त्याग और अस्तित्व की लड़ाई से जुड़ा है। यह प्रेमचंद के यथार्थवाद को दर्शाता है, जहाँ भावनाओं को सामाजिक और आर्थिक वास्तविकताओं के संदर्भ में देखा जाता है।

नारी मुक्ति की अवधारणा

जैनेन्द्र की नारी पात्रों में आत्मोत्सर्ग और आंतरिक मुक्ति की तलाश दिखाई देती है। उनकी नायिकाएं बाहरी तौर पर विद्रोह नहीं करतीं, बल्कि सदगृहस्थ, नैतिकता और पुरुषों के लिए प्रेरणास्रोत बन कर रह जाती हैं । उनमें एक विशेष प्रकार का आत्मोत्सर्ग पाया जाता है, जिसके बल पर वे सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आक्रोश प्रकट कर पाती हैं । मृणाल की मुक्ति उसके आत्मपीड़न और सत्यनिष्ठा में है, जो उसे सामाजिक बंधनों से आंतरिक रूप से मुक्त करती है, भले ही उसका जीवन त्रासदीपूर्ण हो ।

प्रेमचंद की नारी पात्रों में सामाजिक-आर्थिक स्वतंत्रता और समानता की चेतना प्रमुख है। उनकी नारियाँ संघर्षरत और मेहनतकश हैं, जो अपने जीवन को सुखी, संपन्न और स्वतंत्र बनाने का प्रयास करती हैं । वे सामाजिक नियमों को चुनौती देती हैं और यथासंभव विरोध व विद्रोह का साहस रखती हैं । प्रेमचंद नारी की आर्थिक स्वतंत्रता और समानता के पक्षधर हैं । जैनेन्द्र और प्रेमचंद दोनों ही नारी मुक्ति के पक्षधर हैं, लेकिन उनके मार्ग भिन्न हैं। जैनेन्द्र के लिए मुक्ति एक आंतरिक, मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जहाँ पात्र समाज के नियमों को सीधे चुनौती दिए बिना अपने 'स्व' को बनाए रखते हैं, भले ही इसका परिणाम आत्म-त्याग हो। प्रेमचंद के लिए मुक्ति सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता से जुड़ी है , जहाँ पात्र सक्रिय रूप से अन्याय का विरोध करते हैं और अपने अधिकारों के लिए लड़ते हैं। यह दर्शाता है कि मुक्ति की अवधारणा लेखक के दार्शनिक और सामाजिक दृष्टिकोण से कैसे प्रभावित होती है।

तालिका: मृणाल और धनिया के संघर्षों और वैचारिक भिन्नताओं का तुलनात्मक विश्लेषण

यह तालिका दोनों पात्रों के बीच की प्रमुख भिन्नताओं को एक नज़र में समझने में मदद करती है, जिससे तुलनात्मक विश्लेषण की स्पष्टता और प्रभावशीलता बढ़ जाती है। यह सीधे शोध के केंद्रीय प्रश्न को संबोधित करती है।

विशेषता/पैरामीटर	मृणाल (त्यागपत्र)	धनिया (गोदान)
संघर्ष का मुख्य क्षेत्र	व्यक्तिगत, आंतरिक, भावनात्मक	सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक
संघर्ष की प्रकृति	मनोवैज्ञानिक, अस्तित्वगत, आत्म-पीड़न	बाह्य, व्यवहारिक, अस्तित्व की लड़ाई
विरोध का स्वरूप	मौन अस्वीकृति, सत्यनिष्ठा के कारण सामाजिक अलगाव	मुखर प्रतिरोध, अन्याय के खिलाफ सीधी आवाज, सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती
स्वतंत्रता की अवधारणा	आंतरिक मुक्ति, सामाजिक बंधनों से परे 'स्व' की पहचान	सामाजिक-आर्थिक समानता, अधिकारों की प्राप्ति, पारिवारिक गरिमा
सामाजिक भूमिका	समाज द्वारा परित्यक्ता, हाशिये पर धकेली गई, 'नारी समाज' का प्रतिनिधित्व	ग्रामीण महिला का प्रतिनिधि, परिवार की आधारशिला, अन्याय के विरुद्ध संघर्षरत
प्रेम के प्रति दृष्टिकोण	आदर्शवादी, निस्वार्थ, सत्य-आधारित, सामाजिक मर्यादाओं से ऊपर	व्यवहारिक, कर्तव्यनिष्ठ, पारिवारिक निष्ठा से जुड़ा
लेखक का दर्शन	मनोविश्लेषणवादी यथार्थवाद	आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद

5. निष्कर्ष

मृणाल और धनिया, दोनों ही स्वतंत्रता-पूर्व भारतीय समाज में नारी की पीड़ा और संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं, किंतु उनके संघर्षों की प्रकृति और उनसे निपटने की वैचारिक भिन्नता उनके रचनाकारों के भिन्न साहित्यिक दर्शनों का स्पष्ट प्रतिबिंब है। मृणाल का संघर्ष व्यक्ति के अंतर्मन में पनपता है, जहाँ वह सामाजिक रूढ़ियों के कारण उत्पन्न आंतरिक द्वंद्व और आत्मपीड़न से जूझती है। उसकी मुक्ति की अवधारणा आत्मोत्सर्ग और सत्य के प्रति अडिग रहने में निमोहित है। इसके विपरीत, धनिया का

संघर्ष बाह्य सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से है, जहाँ वह परिवार के अस्तित्व और स्वाभिमान के लिए महाजनों, जमींदारों और पितृसत्तात्मक व्यवस्था से मुखर रूप से टकराती है। उसकी वैचारिक पृष्ठभूमि मानवता, न्याय और सामाजिक समानता पर आधारित है। यह निष्कर्ष दोनों पात्रों के संघर्षों की विविधता को उजागर करता है, यह दर्शाता है कि नारी शक्ति केवल एक ही रूप में प्रकट नहीं होती। मृणाल का आंतरिक दृढ़ संकल्प और धनिया का बाह्य प्रतिरोध, दोनों ही अपने-अपने तरीके से तत्कालीन समाज में नारी की जटिल स्थिति और उसकी अदम्य भावना को दर्शाते हैं। यह हमें बताता है कि संघर्ष केवल बाहरी नहीं होते, बल्कि आंतरिक भी हो सकते हैं, और दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

हिंदी साहित्य में मृणाल और धनिया का स्थायी महत्व केवल उनकी व्यक्तिगत कहानियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हिंदी साहित्य में नारी विमर्श के विकास को भी दर्शाता है । मृणाल जैनेन्द्र के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की एक महत्वपूर्ण नायिका है, जिसने हिंदी साहित्य में नारी के आंतरिक जीवन और उसकी जटिलताओं को गहराई से प्रस्तुत किया। वह व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सत्यनिष्ठा की कीमत चुकाने वाली नारी का प्रतीक है। धनिया प्रेमचंद के यथार्थवादी चित्रण की पराकाष्ठा है, जो ग्रामीण भारत की संघर्षशील, स्वाभिमानी और कर्मठ नारी का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करती है। वह सामाजिक अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने वाली नारी शक्ति का प्रतीक है। जैनेन्द्र ने जहाँ नारी के मनोवैज्ञानिक आयाम खोले, वहीं प्रेमचंद ने उसके सामाजिक और आर्थिक संघर्षों को मुखर किया। इन पात्रों ने आने वाली पीढ़ियों के लेखकों के लिए नारी चित्रण के नए आयाम स्थापित किए और नारी को 'वस्तु' के बजाय 'मनुष्य' के रूप में प्रतिष्ठित करने की नींव रखी।

आज के आधुनिक नारी विमर्श में भी मृणाल और धनिया के संघर्ष प्रासंगिक हैं। यद्यपि ये पात्र स्वतंत्रता-पूर्व भारत के हैं, उनके संघर्ष आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि पितृसत्तात्मक संरचनाएँ और सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ विभिन्न रूपों में बनी हुई हैं। मृणाल का आत्म-त्याग और सत्यनिष्ठा आधुनिक नारी को आंतरिक शक्ति और समझौता न करने की प्रेरणा देती है, जबकि धनिया का मुखर प्रतिरोध और सामाजिक अन्याय के खिलाफ संघर्ष आज भी महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए प्रेरित करता है। मृणाल का आंतरिक संघर्ष मानसिक स्वास्थ्य और व्यक्तिगत स्वायत्तता के आधुनिक विमर्श से जुड़ता है, जबकि धनिया का संघर्ष सामाजिक न्याय और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए जारी आंदोलनों से मेल खाता है। इस प्रकार, ये साहित्यिक पात्र केवल ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं, बल्कि समकालीन नारी विमर्श के लिए प्रेरणा और विश्लेषण के स्रोत बने हुए हैं। दोनों पात्र सामूहिक रूप से भारतीय नारी की जटिल यात्रा को दर्शाते हैं, जहाँ व्यक्तिगत मुक्ति और सामाजिक परिवर्तन दोनों ही आवश्यक हैं।

6. संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

- [1]https://ijcrt.org/papers/IJCRT1807056.pdf
- [2]https://mu.ac.in/wp-content/uploads/2022/06/Paper-No.13.2-Jainendra.pdf
- [3]https://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2104734.pdf
- [4]https://ijrtspublications.org/fileserve.php?FID=268
- [5]https://www.nepjol.info/index.php/TUJ/article/view/24725/20851
- [6]https://www.inspirajournals.com/uploads/Issues/2128855821.pdf

- [7]https://www.maitreyi.ac.in/uploads/research/Samvedna/issues/vol5/issue1/hindisection/h7.pdf
- [8]https://anubooks.com/uploads/session_pdf/166296751917.pdf

Works cited

1. प्रेमचंद की किताब गोदान | हिंदवी - Hindwi, accessed July 9, 2025, https://www.hindwi.org/ebooks/detail/godaan-ebooks-1
2. प्रेमचन्द के उपन्यासों में स्त्री विमर्श : एक अध्ययन, accessed July 9, 2025, https://www.nepjol.info/index.php/TUJ/article/view/24725/20851
3. इकाई - 1 - गोदान (उपन्यास) प्रेमचंद, accessed July 9, 2025, https://www.unishivaji.ac.in/uploads/distedu/2023-2024/SIM/MA%20II/M-%20A-%20I%20Hindi%20Sem-%20I%20Adhunik%20Hindi%20Gadhya.pdf
4. मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास गोदान का अध्ययन - IJCRT, accessed July 9, 2025, https://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2104734.pdf
5. दृष्टि, accessed July 9, 2025, https://blogmedia.testbook.com/kmat-kerala/wp-content/ uploads/2023/05/paper-2-section-b-prose-literature-part-1-novel-story-51a00c92.pdf
6. www.inspirajournals.com, accessed July 9, 2025, https://www.inspirajournals.com/uploads
7. 'त्यागपत्र' उपन्यास में जैनेन्द्र कुमार का उद्देश्य - IJCRT, accessed July 9, 2025, https://ijcrt.org/papers/IJCRT1807056.pdf
8. त्यागपत्र उपन्यास जैनेंद्र कुमार ll tyagpatra upanyas in hindi ll त्याग-पत्र उपन्यास #bihar_stet, accessed July 9, 2025, https://www.youtube.com/watch?v=6O5-tg8SFbk
9. जैनेन्द्र की कहानियों में स्त्री एवं प्रकृति का स्वरूप, accessed July 9, 2025, https://www.maitreyi.ac.in/uploads/research/Samvedna/issues/vol5/issue1/hindisection/h7.pdf
10. Sep. 2019 - जैनेन्द्र के कथा साहित्य में नारी चिन्तन के शाश्वत मूल्य, accessed July 9, 2025, https://anubooks.com/uploads/session_pdf/166296751917.pdf
11. जैनेन्द्र का उपन्यास त्यागपत्र, accessed July 9, 2025, https://www.shodhjournal.com/assets/archives/2023/vol4issue1/4008-1682512917650.pdf
12. Author Guidelines for 8 - IJRTS Publications, accessed July 9, 2025, https://ijrtspublications.org/fileserve.php?FID=268

13. premchand's godan – a portrayal of the qualities of an ideal indian woman - Jetir.org., accessed July 9, 2025, https://www.jetir.org/papers/JETIR1810259.pdf
14. Tyagpatra ki Samiksha || Jainendra kumar aur unka upnyas #त्यागपत्र की समीक्षा, accessed July 9, 2025, https://www.youtube.com/watch?v=dez8HzM2LnY
15. Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281 - मृदुला गर्ग के उपन्यासों में महिला लेखन परम्परा का अध्ययन, accessed July 9, 2025, https://www.ijamsr.com/issues/6_Volume%205_Issue%201/20220121_050107_5012.pdf